ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

- दुष्यन्त कुमार की कविताओं में देश की दशा पर व्यथा–*उमाकान्त* 92-97
- प्रेमचन्द की स्त्री दृष्टि–*डॉ. उदय नारायण राय एवं योगेन्द्र कुमार यादव* 98-99
- रामकाव्य परम्परा एवं सूरदास–*डॉ. अनीष* 100-103
- महीप सिंह की कहानियों में चित्रित पति-पत्नी सम्बन्ध 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कथा-संग्रह के विशेष संदर्भ में–*डॉ. प्रवीण कुमार न. चौगुले* 104-107
- महँगाई का विकराल ह्रूप : 'बाबूजी'–*डॉ. श्रीकांत पाटील* 108-109
- प्राचीन काल में स्त्री-दृष्टि–*धर्मेन्द्र* 110-116
- डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की दृष्टि में स्त्री-मुक्ति–*डॉ. संतोष राजपाल नागुर* 117-119
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्र : स्त्री विमर्श के सम्बन्ध में–*डॉ. (श्रीमती) बीना मथेला एवं हिमांशी बिष्ट* 120-124
- रामलीला का उद्भव एवं विकास–*अमिता सिंह* 125-127
- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और निर्मल वर्मा–*नर नारायण 'शास्त्री'* 128-131
- समकालीन स्त्री लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चेतना के विविध रूप–*दीपक कुमार* 132-135
- साक्षात्कार *डॉ. परशुराम शुक्ल की–आनन्द बक्षी से बातचीत* 136-140
- साहित्य में लोक जीवन, अर्थ अवधारणा और अभिव्यक्ति–*रंजना* 141-144
- मुक्तिबोध का कवि व्यक्तित्व एवं प्रयोगधर्मिता–*पंकज कुमार मिश्र* 145-148
- प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी संघर्ष–*प्रो. वसुंधरा उदयसिंह जाधव* 149-151
- 'यमदीप' उपन्यास के विन्यस्त थर्ड जेन्डर के जीवन का यथार्थ : औपन्यासिक अन्तर्वस्तु और प्रत्यक्ष अनुभव–*दिनेश कुमार* 152-159
- हिन्दी का वैश्विक फलक और उसकी चुनौतियाँ–*हरिओम कुमार द्विवेदी* 160-161
- घनानन्द के काव्य में भक्ति तत्व–*सुन्दरम् शर्मा* 162-164
- छायावादी कविता में जागरण के स्वर–*डॉ. देवर्षि कुमार मिश्र* 165-170
- 'बिना दीवारों के घर' नाटक में चित्रित पारिवारिक विखराव–*प्रो. रगड़े, पी. आर.* 171-173
- मोहन राकेश के नाटकों की संवाद योजना–*जयराम गाडेकर* 174-178
- आदिवासी लोक संस्कृति–*डॉ. राजेन्द्र सोमा घोड़े* 179-182
- गुरु गोविन्द सिंह की वाणी का दार्शनिक पक्ष–*केवल कुमार* 183-189
- निर्मल वर्मा की कहानियों का एक अनुशीलन–*भागेश देवन* 190-195
- थारू लोकगीत : एक समृद्ध विरासत–*दिवाकर राय* 196-199
- तुलसी एवं केशव का साहित्य को अवदान–*डॉ. शाहिदा परवीन* 200-202
- 'रसप्रिया' में आंचलिक संवेदना तथा सांस्कृतिक चेतना की जीवंतता–*डॉ. काले लक्ष्मण तुलसीराम* 203-205
- वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता–*प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार* 206-209
- अमरकान्त की कहानियों में सांस्कृतिक परिदृश्य–*प्रो. स्मिता चतुर्वेदी एवं सतेंद्र बहादुर सिंह* 210-214
- भारतीय चेतना और निराला का काव्य–*शशिभूषण सिंह* 215-217
- आधुनिक हिन्दी कहानी में अभिव्यंजित लोकतांत्रिक चेतना–*अमित कुमार ओझा* 218-222

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

(U.G.C. Approved Journal No. : 41329)

*ISSN No. - 2319-5908

Hindi : Shodh Sandarsh-VII, Vol.-XXII, March-2019, Page : 206-209

General Impact Factor : 1.4293, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता

*प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार**

वैश्वीकरण से समाज के मुल्य, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन आचार-विचार और मानवीय संवेदनाओं में आमूलाग्र परिवर्तन हो गया। वैश्वीकरण ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश को प्रभावित किया जिससे साहित्य भी अछुता नहीं रहा। हिन्दी कविता में वैश्वीकरण से निर्माण अनेकों विकृतियों को उघाड़ा गया है। वैश्वीकरण के कारण बाजारवाद पनपने लगा जहाँ वस्तु, बाजार, चकाचौंध, बाह्याडांबर, विज्ञापन का मायाजाल, अश्लीलता और अनैतिकता का तांडव, मॉलसंस्कृती, आत्मकेंद्रता एवं पतित सामाजिक मूल्य पनपने लगे। मनुष्य गौण हो गया और बाजार प्रमुख। भौतिक साधनों के चकाचौंध ने और अधिक पाने की लालसा में संबंधों को, भाइचारे को और अपनो को छोड़ दिया। रिश्ते-नाते बिखर गए, इस वास्तविकता को 'दिलीप कुमार शर्मा' ने 'घर का बन जाना' कविता में उघाड़ा है।

"एक घर जो मेरे भाई का है।
एक घर जो मेरे भैया का है।
और एक घर जो मेरा है।
मैं भाई के घर जा नहिं सकता
अब किसी को पसंद नाहीं
किसी के घर आना-जाना
घर के अंदर घर है।"

घर पारिवारिक सौहार्द, और संवेदनाओं से बनता है लेकिन वैश्वीकरण, भौतिकता और आत्मकेंद्रिता ने घर को वस्तुसम बना दिया है। अर्थ लोलुप मानसिकता ने मनुष्य को अत्यन्त विकृत और संकुचित बना दिया है। रिश्ते-नाते गौण बन गए हैं। अपनापन, प्रेम, समर्पण कि जगह अजनबीपन, अकेलेपन, कुंठा ने ले ली है।

स्त्री-मुक्ति स्वर के नाम पर स्त्री शोषण, मुक्तयौन संबंध, स्त्रीयों का उपभोग आदि विकृतियों ने समाज और साहित्य को ग्रस लिया। साहित्य समाज का दर्पण होता है। वैश्वीकरण, उदारीकरण निजीकरण और बाजारवाद ने समाज को विकृत किया और इसी विकृती का बिंब साहित्य में उभरकर आया। वैश्वीकरण के कारण भौतिक साधन, सत्ता, अर्थ, उपभोग और स्वार्थ महत्वपूर्ण हो गए और मानवता, संवेदना, प्रेम, और मूल्य निरर्थक हो गए। अर्थ एवं सतापिपासु मानसिकता ने शोषण, अन्याय, अत्याचार एवं विकृतियों को बढ़ावा दिया। भारतीय सभ्यता में नारी को पूजा जाता है। परंतु वैश्वीकरण ने बाजारवाद को बढ़ावा दिया जिसका उद्देश्य अर्थप्राप्ती, भ्रम, चकाचौंध और शोषण है जिसका शिकार नारियाँ बनीं। नारी को उपभोक्ता संस्कृती ने उपभोग की वस्तु मात्र बना दिया। लोग अपनी घृणित वासना को पूरा करने के लिए नारियों को अपना शिकार बना रहे हैं। नौकरी, विज्ञापन, तरक्की, फिल्म प्रवेश के नाम पर लड़कियों का नाजायज फायदा उठाया जा रहा है। नारियों का शोषण करने वाले सत्ता, धन, भ्रष्टाचार के सहारे सब कुछ लूटकर बेखौफ घूम रहे हैं और स्त्री असहाय, बेसहारा हो लुंठन को फिर से व्यवस्था के लिए उपलब्ध होता है।

कवि 'विष्णु नागर' के शब्दों में

"उसे बताया गया था कि उसका सबकुछ लुट चुका है
जिसका मतलब ये था कि ए औरत

* *अध्यक्ष, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर*

[ISSN : 2319-5908]

ADAT VIKARAN EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist. Nanded

तेरा लुटेरा पकड़ा भी गया तो क्या फायदा
लूट का माल तो उससे बरामद होने से रहा
और उसके साथ फिर से ऐसा कुछ हो।
तो वह प्रतिरोध न करे
क्योंकि जिसका सब कुछ पहले ही लुट-चुका है।''

वैश्वीकरण से पनपे उपभोक्ता संस्कृति, मॉल कल्चर, पब कल्चर ने मनुष्य को अत्यन्त विकृत, घृणित और विक्षिप्त बना दिया है। सब कुछ पाने की लालसा ने मनुष्य को मूल्यहीन और चरित्रहीन बना दिया है। भोगप्रधान मानसिकता ने विवाह बाह्य संबंध, विवाहपूर्व यौन संबंध, अनेकों स्त्री एवं पुरुषों से यौन संबंध घटस्फोट, अविश्वास, आदि अनेकों अनैतिकताओं में अपनी जड़ें मजबूत की हैं। वर्तमान समाज की विक्षिप्त मानसिकता को उघाड़ने वाली 'अष्टभुजा शुक्ल' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं।

''भारत घोड़े पर सवार है
कैसा ललित ललाम यार है
एक हाथ में पेप्सी कोला, दुजे में कंडोम
तीजे में रमपुरिया चाकू चौथे में हरिओम
कैसा ललित ललाम यार है
भारत घोड़े पर सवार है
कहीं बलात्कार हो जाये
चुप रहना नारी जी''

मनुष्य लालसावश दोगला, चापलूस, षड्यंत्री, विकृत, वासनांध, भ्रष्ट एवं स्वार्थी बन गया है। शिखर तक पहुँचने के लिए सारे जायज-नाजायज रास्ते अपना रहा है। स्त्री भी सफलता पाने के लिए हॉनी-ट्रंप का हतकंडा अपना रही है। अश्लीलता, का सहारा लिया जा रहा है। अनेकों विज्ञापन, फिल्में, फोटोशूट, इसके परिचायक हैं। क्रयवृद्धि और मुनाफाखोरी ने स्त्रियों का उपभोग किया और स्त्री-भी इसमें आपत्ती दर्ज नहीं कर रही हैं।

वैश्वीकरण ने उपजी चकाचौंध भरी स्त्री मानसिकता को 'नीलेश रघुवंशी' ने अपने काव्य में उघाड़ा है।

''चमचमाती कार में रंगीन चश्मा, हाथ में मोबाइल
लकदक कपड़ों में नाचती गाती,
खूबसूरत लड़कियाँ झांसे में आकर बनती है।
वे सोचती भी नहीं जिसके बारे में दूर दूर तक
काली सूची में दर्ज है नाम खूबसूरत लड़कियों के भीतर
लड़कियों की भी एक सूची
बड़ी खूबसूरती से धकेला जिसने उन्हें, इस संसार में।''

मॉल संस्कृति, बाजार संस्कृति, और पब कल्चर यह सब वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण की देन हैं जिसके मोह-जाल में मनुष्य फँसता जा रहा है। इस संस्कृति ने मनुष्य को पतित बना दिया है। नग्नता, अश्लीलता, नशाखोरी, शरीरसुख प्रधान मानसिकता, दिखावा प्रधान व्यवहार आदि इसी सभ्यता की देन हैं। महानगरों में युवक -युवती तो इस कल्चर के आदि हो गए हैं। फास्ट-फूड, शराब, सिगरेट, मनोरंजन तो इस कल्चर के हिस्से बन गए हैं। इसी कारण महानगरों में मॉल की संख्या तीव्रता से बढ़ रही है। इस वास्तविकता को 'मॉल में कबूतर' नामक कविता संग्रह में विनय कुमार ने अभिव्यक्त किया है।

''जमीन झगड़े की हो
और निर्माता दबंग और रसूखदार
तो फटाफट बनता है मॉल
लगता है अगर

किसी नेता का अकूत काला धन
तो चकाचक बनता है मॉल
इस बनने को बनना कहना
मॉल की तौहीन है जनाब
यह डंडे की तरह खड़ा होता है
और झंडे की तरह फहराता है
आप भी गलत हैं भाई साहब
मॉल न बनता है, न खड़ा होता है
सच तो यह है
कि इसे शहर के सीने पर
ठोक दिया जाता है।"

बाजारवादी संस्कृति ने लोगों की मानसिकता को विकृत और संकुचित बना दिया है। पूंजीपती, राजनेता और माफिया ने बाजारवादी संस्कृति को लोगों पर थोपने में सफल हो गई है। निरर्थक एवं अनुपयोगी, वस्तुओं और सभ्यताओं को लोग अपना रहे हैं। 'शैलेंद्र शर्मा' के शब्दों में–

"दो रुपये की कठपुतली है
टेडी बियर हजार का
कसने लगा गले में फंदा
है ग्लोबल व्यापार का
आलू भरे पराठे भूले
नेनू डाल छाछ
पिज्जा-बर्गर अच्छे लगते
कोल्डड्रिंक के साथ"

मीडिया, विज्ञापन और मॉल मनुष्य को ठगने के अड्डे बने हैं। विज्ञापन के सहारे पूंजीपति निरर्थक वस्तुओं का बोझ आवाम पर बढ़ा रहे हैं। विज्ञापन के सहारे पूंजीपति अपने अनुसार लोगों की निरर्थक वस्तुओं की क्रय की मानसिकता को विकसित कर रहे हैं। रोज-मर्रा की जरूरतों को विज्ञापन मीडिया बाजार के द्वारा बढ़ाया जा रहा है यूज एन्ड थ्रो कल्चर को भी बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक लोगों को लूटा जा सके। मनुष्य धीरे-धीरे अनावश्यक और अतिरिक्त चीजों के बोझ तले दबता जा रहा है। इस वास्तविकता को 'राजेश जोशी' अतिरिक्त चीजों की माया 'कविता में उघाड़ते हैं–

"बाजार से लेने जाता हूँ जरुरत की कोई चीज
तो साथ थमा दी जाती है एक और चीज मुफ्त
उस चीज की कोई जरुरत नहीं मुझे
पर लेने से इंकार नहीं कर पाता उसे
और बस इसी तरह एक पल में पकड़ लिया जाता हूँ
उस अतिरिक्त के लिए जरुरत की चीजों के बीच
थोड़ी जगह बनाता हूँ।
तो जल्दी चीजों की जगह थोड़ी सिकुड़ जाती है
अतिरिक्त हमारे मन की कमजोरी को पहचानता है।
लालच धीरे-धीरे पाँव पसारता है।

एक अतिरिक्त दूसरे अतिरिक्त को बुलाता है।
और दूसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए जगह बनाता है।
एक दिन सारी जगह अतिरिक्तों से भर जाती है।''

भूमंडलीकरण ने अर्थलोलुपता, अमानवीयता, असंवेदनशीलता, क्रुरता, और हिंसा को बढ़ाया दिया है। मनुष्य अर्थ, सत्ता, प्रसिद्धि और स्वार्थ के लिए रिश्ते-नाते और समाज को कुचल रहा है। उन्हें नोच रहा है। हत्या, बलात्कार, डकैती, आदि घटनायें महानगरों में आम हो गई हैं। अंधी दौड़ ने मनुष्य को चरित्रहीन बना दिया है। 'अरुण कमल' के शब्दों में

''बोलना गुनाह
खाँसना गुनाह
आँगन में औरतों का हँसना गुनाह
छुरा भाँजते गुंडे छुट्टा घूम रहे हैं
और अपने ही घर की चौखट पर बैठा आदमी
मारा जा रहा है।
सड़क पार करते
अचानक किसी बात पर हँसते
कहीं कभी कोई भी कत्ल हो जा सकता है
ऐसा ही वक्त आ गया है।''

वैश्वीकरण बाजारीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, ने जहाँ मानव के लिए अनगिनत सुविधायें दी और मानवी जीवन को सहज बनाया तो दूसरी और अनेकों समस्याओं को भी जन्म दिया। अनीति, शोषण, क्रूरता, हिंसा, उपभोग संस्कृति, मॉल एवं पब कल्चर, घटस्फोट का बढ़ता प्रमाण, अनैतिक संबंध, कुँवारी माताओं में वृद्धि, शरीर सुखप्रधान मानसिकता, पर्यावरण का अती दोहन, प्रेम का विकृत रूप, बलात्कार, बिखरते रिश्ते-नाते, हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, असंवेदनशीलता, विज्ञापन एवं सिनेमा में बढ़ती नग्नता आदि अनेकों समस्याएँ वैश्वीकरण से उपजे माहौल में पनपने और बढ़ने लगी। आत्मकेंद्रित मानसिकता ने कुंठा, निराशा, अजनबीपन, अकेलापन, अहंकार और स्वार्थ को बढ़ावा दिया। मानव प्रेम एवं संवेदनाओं से कटकर पशुता और यांत्रिकता की ओर बढ़ने लगा। समाज के इन विविध विकृतियों को हिंदी कविता में उखाड़ने का प्रयास किया है।

❖❖❖❖❖

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S
DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR
* Dist.Nanded *

UGC Journal Details

Name of the Journal : शोध संदर्श

ISSN Number : 23195908

e-ISSN Number :

Source: UGC

Subject: Hindi;Linguistics and Language

Publisher: दारागंज, इलाहाबाद

Country of Publication: India

Broad Subject Category: Arts & Humanities

| Print

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded